sns academy
a fingerprint school
sns INSTITUTIONS
www.snsgroups.com

पैकुङ के पंख

1.

कविता का मूलभाव

यह अरुणाचल की प्रसिद्ध लोककथा है जिसे कविता का रूप दिया गया है। इस कविता में बताया गया है कि हम अपनी गलती स्वीकार करना सीखें और उससे सबक लें तो हम सबको अपना मित्र बना सकते हैं।

Summary

This is a famous folk story of Arunachal Pradesh in the form of poetry. This poem tells us if we learn to accept our mistakes and take lessons from them we can make all our friends.

2.

कविता का सरलार्थ

गिलहरी.....जा टकराया।

गिलहरी लीचू के पेड़ पर बैठी लीचू खा रही थी जिसे देख पैकुङ नामक पक्षी ज़ोर-ज़ोर से शोर मचाने लगा। गिलहरी डर गई तथा उसके हाथ का लीचू छूटकर नीचे खड़े हिरन की पीठ पर लगा। हिरन अचानक इस प्रकार के आघात से डरकर तेज़ी से भागा। भागते हुए हिरन एक पत्थर से जा टकराया।

लुढ़क-पुढ़क.....बनवा लूँगा।

हिरन जिस पत्थर से टकराया था, वह पत्थर लुढ़कता हुआ गया और केले के पेड़ से टकराया, जिससे केले के पेड़ पर लगा केला टूटा और टूटकर नदी में बह गया। नदी में रह रहा केकड़ा इसे देख डर गया।

केकड़े.....तुम भी ले लो।

नदी में बह रहा केला केकड़े की आँख पर लगा और केकड़े की आँख फूट गई। केकड़ा अंधा हो गया, उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। केकड़े ने मन में विचार किया कि मैं केले से इस चोट का हरजाना लूँगा और हरजाने में मिली रकम से अपनी आँख का इलाज करवाऊँगा।

केला बोला.....घबराया।

केकड़े द्वारा केले से हरजाना माँगने पर केला बोला कि तुम गुस्सा न करो क्योंकि इसमें मेरा कोई कसूर नहीं है। पत्थर के टकराने से मैं टूटकर नदी में गिरा था व तुम्हारी आँख पर लगा था। इसलिए तुम और मैं दोनों ही पत्थर से हरजाना माँगेंगे।

दोनों ने जब पत्थर से हरजाना माँगा तो पत्थर ने इसका दोष हिरन पर लगाया और हिरन ने अपना दोष न मानते हुए लीचू को इसके लिए उत्तरदायी माना।

लीचू ने भी इसे अपना कसूर न मानते हुए कहा कि इसमें मेरी कोई गलती नहीं है, मैं अपने-आप नीचे नहीं गिरा बल्कि गिलहरी ने मुझे तोड़ा था। गिलहरी ने अपना दोष पैकुङ पर लगाते हुए कहा कि पैकुङ ने मुझे डराया था इसलिए मेरे हाथ से छूटकर लीचू नीचे गिर गया।

पैकुङ बोली.....खुशी मनाएँ।

पैकुङ ने अपनी गलती के लिए क्षमा माँगते हुए हरजाने के रूप में अपने सुंदर पंख देने की बात की। उसके अनुसार पंख तो दोबारा उग सकते हैं, परंतु अच्छे मित्र बहुत कम मिलते हैं। हमें नए मित्रों के मिलने का जश्न मनाना चाहिए। पैकुङ के मधुर वचनों से प्रभावित हो गिलहरी, हिरन, पत्थर, लीचू, केले और केकड़े सब उसके मित्र बन गए। सबने मिलकर मीठे-मीठे फल खाकर खुशी मनाने का निश्चय किया।

3. पढ़ें, समझें और पर्यायवाची शब्दों का मिलान करें—

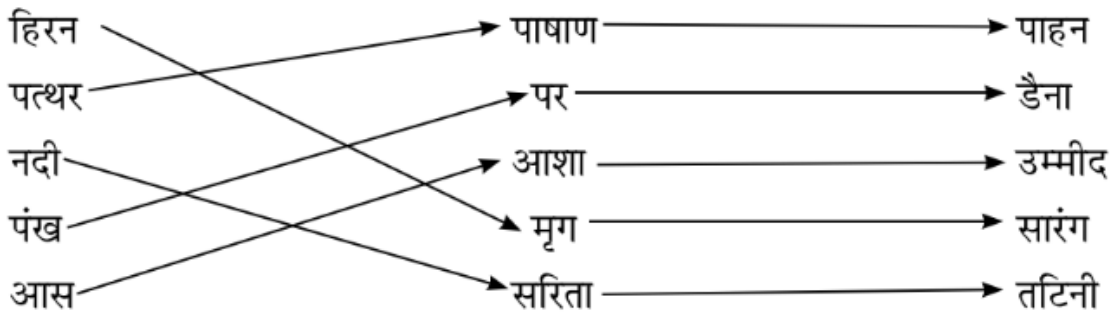

4. पढ़ें और कविता में इनके लिए आए विशेषण शब्द ढूँढ़कर लिखें—

.....फूटी.....	आँख	.....सब.....	मित्र
.....सारे.....	पंख	.....मीठी.....	वाणी

5. समझकर इस कविता को कहानी रूप में लिखें—

एक गिलहरी थी। एक दिन वह लीचू खा रही थी। उसी समय पैकुङ पक्षी ने अपनी आवाज़ से गिलहरी को डराया जिससे लीचू नीचे गिर गया। लीचू हिरन पर गिरा। हिरन डरकर पत्थर से टकरा गया। पत्थर केले के पेड़ से टकराया व केला टूटकर नदी में गिरा जिससे केकड़े की आँख फूट गई। जब उसने केले से हरजाना माँगा तो उसने कहा, यह पत्थर का दोष है, उससे हरजाना लो। पत्थर ने हिरन को तथा हिरन ने लीचू को, लीचू ने गिलहरी को, गिलहरी ने पैकुङ को दोषी ठहराया। पैकुङ ने माफ़ी माँगते हुए हरजाने में अपने पंख देने को कहा। सभी उसकी मीठी वाणी से प्रभावित हुए तथा सबने मिलकर मित्र बनने और खुशी मनाने की बात की।

6. इनके उत्तर में कविता की पंक्तियाँ लिखें—

क. गिलहरी के लीचू खाने पर क्या हुआ—
- ...गिलहरी ने लीचू खाया...
- ...पैकुङ ने टें-टें शोर मचाया;...
- ...गिलहरी को खूब डराया...
- ...पूरा लीचू नीचे आया।...

ख. केले ने केकड़े से क्या कहा?
- ...केला बोला—करो न रोष...
- ...इसमें मेरा तनिक न दोष;...
- ...पत्थर से हरजाना ले लो...
- ...मैं भी लूँगा, तुम भी ले लो।...